24. तैयार परिधान

वर्तमान समय में वस्त्र उद्योग में जितना अधिक विकास तेजी के साथ हुआ है उतना अन्य किसी उद्योग में देखने को नहीं मिलता। वस्त्र विज्ञान के क्षेत्र में जितना अधिक वस्त्रों के चयन एवं खरीदारी का महत्त्व है उससे कहीं अधिक महत्त्व वस्त्रों की सिलाई का है। आज का मानव शरीर को ढकने के साथ-साथ आराम भी परिधानों में ढूंढ़ता है। प्राचीन समय में वस्त्रों से परिधान सिलने व बनाने का प्रचलन घर में ही था, आवश्यक और आधारभूत परिधान गृहिणी घर पर ही सिल लिया करती थी। धीरे-धीरे ये प्रचलन सिलाई मशीन के आविष्कार के साथ बढ़ता गया। कुछ परिधान, जैसे-जांघिया, पायजामा, शमीज, पेटीकोट, साधारण फ्रॉक और कुरते घर पर ही सिले जाने लगे परन्तु कुछ परिधान जो पुरुषों के द्वारा विशेष पहने जाते थे, जैसे शर्ट, पैन्ट, जैकेट और कोट और स्त्रियों के विशेष वस्त्र, जैसे-ब्लाउज, फैन्सी फ्रॉक, डिजाइनदार सलवार सूट आदि परिधान दर्जी द्वारा सिले जाते थे। इस प्रकार परिवार की पोशाक सम्बन्धी आवश्यकताएं पूरी होने लगी। परन्तु उपरोक्त पोशाक बनाने की प्रक्रिया में समय और शक्ति का अतिरिक्त व्यय व अपव्यय होता था।

जैसे-जैसे समय बदलता गया बाजार में सिले-सिलाये परिधान उपलब्ध होने लगे। वस्त्र तकनीकी विकास एवं औद्योगिकीकरण के कारण तैयार पोशाक या सिले-सिलाये वस्त्रों की मांग एवं उपलब्धता में वृद्धि होने लगी। वर्तमान समय में मानव ज्यादातर तैयार पोशाक ही पहनना पसन्द करता है। इन तैयार पोशाकों का प्रचलन इतना ज्यादा बढ़ गया है अनेकों-अनेक कम्पनी और ब्रॉन्ड्स के परिधान बाजार में उपलब्ध हैं। यह परिवर्तन कई कारणों से आया। जैसे-दर्जी के द्वारा समय पर पोशाक तैयार करके न देना, स्त्री और पुरुष दोनों का कामकाजी होना, प्रचलित फैशन, डिजाइन और स्टाइल की पोशाकों की उपलब्धता, कीमत, समय एवं श्रम की बचत। इसके अलावा सबसे बड़ा कारण कि बाजार में प्रत्येक नाप और लगभग सारी शारीरिक संरचनाओं के आधार पर तैयार पोशाकों की उपलब्धता। उपरोक्त सभी कारणों ने तैयार पोशाक उद्योग को एक बड़े पैमाने पर व्यवसाय का रूप दे दिया।

सामान्य और सरल भाषा में सिले-सिलाये परिधान या तैयार पोशाक वह है जो हमें कम समय में, उपलब्ध धन में, उचित व उपयुक्त नाप वाली, जिसकी देख-भाल आसान हो, हमारी आवश्यकता की तत्काल पूर्ति करती हो, व्यक्ति के व्यक्तित्व के अनुकूल हो और पहनने पर आरामदायक हो।

तैयार पोशाक के चयन एवं खरीदने के आधार

(i) उम्र : सिल-सिलाये वस्त्र बाजार में शारीरिक नाप के साथ-साथ उम्र के अनुसार भी उपलब्ध होते हैं। अत: जब तैयार पोशाक खरीदने जाये तो विशेष तौर से बच्चों की एकदम सही उम्र का पता होना आवश्यक है अन्यथा बच्चे की पोशाक छोटी या बड़ी आ सकती है जिसे बदलवाने या लौटाने का श्रम करना पड़ सकता है। इससे समय और शक्ति, दोनों का अपव्यय होता है।

(ii) शरीर नाप : सही उम्र के साथ जिस व्यक्ति, बच्चे के लिये पोशाक खरीदी जा रही है उसके शारीरिक माप भी अत्यन्त आवश्यक होते हैं क्योंकि एक ही उम्र के होने के बावजूद दो बच्चों के शारीरिक नाप अलग-अलग हो सकते हैं जैसे-लम्बाई, सीना, कमर, कंधे आदि इसलिये तैयार पोशाक खरीदते समय उम्र और शरीर का सही माप होना जरूरी है। इसके लिये बाजार जाते समय बच्चे के शरीर के विभिन्न नाप ले लेने चाहिये जैसे-बालक शर्ट और पैंट के लिये, शर्ट के नाप, सीना, लम्बाई, बाजू की लम्बाई, कंधे आदि (तीरे का नाप) पैंट की नाप- कमर एवं लम्बाई। इस तरह से सही नाप के साथ जाने पर बच्चे के लिये उचित नाप और फिटिंग की पोशाक चयन करना और खरीदना आसान होगा।

तैयार परिधान जांचने के बिन्दु

उपरोक्त दो अतिमहत्त्वपूर्ण आधार के अलावा भी ऐसे कई बिन्दु हैं जिनको जांचने के बाद ही पोशाक खरीदनी चाहिये :

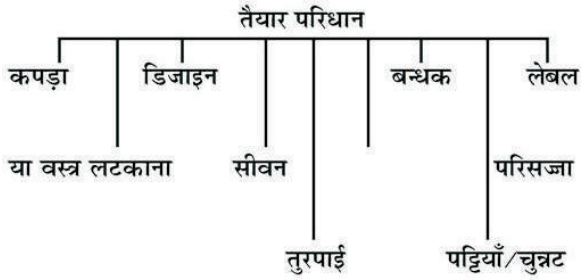

(i) वस्त्र : आपने रेशों व उनसे बने वस्त्रों की विशेषताओं, बुनाई, रंगाई-छपाई आदि की विधियों के बारे में जाना है और रेशों की पहचान करने में सक्षम हैं। अत: इन सबके आधार पर कपड़े में निम्न-गुणों की जांच करें :

(i) वस्त्र का रेशा

(ii) वस्त्र की डिजाइन

(iii) वस्त्र के रंग के पक्केपन की जांच

(iv) वस्त्र की परिसज्जा, मजबूती व टिकाऊपन

(v) वस्त्र की लम्बवत् कटाई

(vi) प्रचलित फैशन के अनुसार वस्त्र, प्रिन्ट व रंग

(ii) लटकाना : ऐसी दुकान या शोरूम से पोशाक लेने जायें जहां ट्रायल कक्ष हो। हमेशा तैयार पोशाक को पहन कर अवश्य देखनी चाहिये, जिससे ये पता चल जाता है कि आप पर वो पोशाक, रंग, फिटिंग, स्टाइल के आधार पर जंचती है या नहीं। पोशाक पहनने से उसके सन्तुलन का भी पता चलता है। आप अपने अलावा, अपने साथ मां या अपनी दोस्त को साथ लेकर जायें और राय करके पोशाक का चयन करें। अगर ट्रायल कक्ष न हो तो अपने ऊपर लगा कर देखें।

(iii) पोशाक की डिजाइन एवं स्टाइल : बाजार में एक ही पोशाक कई रंग, प्रिन्ट, डिजाइन व स्टाइल में उपलब्ध होती है। ऐसे में पोशाक चयन करना मुश्किल हो जाता है। हमें अपनी रुचि एवं प्रचलित फैशन के साथ-साथ अपनी शारीरिक संरचना का भी विशेष ध्यान रखते हुए पोशाक की डिजाइन व स्टाइल का चयन करना चाहिये ताकि हमें सन्तुष्टि अनुभव हो अन्यथा पोशाक आकर्षक लगने के स्थान पर भद्दी लगने लगेगी।

(iv) सीवन : तैयार पोशाक में सीवन की जांच पोशाक को उलटा करके कर लेनी चाहिये, जैसे-

(i) धागे का रंग पोशाक के रंग के अनुसार हो।

(ii) धागे का रंग पक्का व मजबूत है।

(iii) सीवन इकसार, मजबूती व सफाई से लगी हो।

(iv) उचित प्रकार की सीवन का प्रयोग किया गया है और सीवन पास-पास लगी है।

(v) जिन वस्त्रों के धागे निकलते हैं किनारों से उन पर इन्टरलॉक की हुई है।

(vi) पोशाक में सीवन हेतु छोड़ा गया कपड़ा पर्याप्त है ताकि आवश्यकता पड़ने पर पोशाक की चौड़ाई-लम्बाई बढ़ाई जा सके।

(vii) सज्जा हेतु लगाई गई सीवन सफाई से लगी है क्योंकि ऐसी सीवन पोशाक में साफ दिखाई देती है।

(v) तुरपाई : तैयार पोशाक में तुरपाई एक महत्त्वपूर्ण टांका है। पोशाक में ये जांच लेना चाहिये कि तुरपाई के टांके एक समान तथा बराबर दूरी, स्वच्छ व सुन्दर, व पोशाक के सीधी तरफ ये टांके दिखे नहीं। बारीक टांके लगे हों। तुरपाई का धागा मजबूत व टिकाऊ हो ताकि वस्त्र की तुरपाई शीघ्र न खुले। पोशाक पर कम से कम 2''-3'' तक की तुरपाई की गयी हो जिससे आवश्यकता पड़ने पर उसे खोला जा सके।

(vi) पट्टियां एवं चुन्नट : तैयार पोशाक की पट्टियां व बटन पट्टियां बेहद महत्त्वपूर्ण होती है। ये पट्टियां गले, बांह, कमर और शर्ट में सामने की लगी बटन पट्टी का निरीक्षण सावधानीपूर्वक कर लेना चाहिये। पट्टियां पर्याप्त मात्रा में सफाई से लगी हुई है, उन पर लगी सीवन सफाई के साथ बिलकुल सीधी है, टांके बराबर व समान दूरी पर लगे हैं। ऊपर व नीचे की दोनों पट्टियों की लम्बाई समान हो।

पोशाक में घेराव लाने के लिये चुन्नटों का उपयोग किया जाता है। फ्रॉक, स्कर्ट, लहंगे आदि में सुन्दरता लाने के लिये चुन्नट डाली जाती है इनकी भी जांच करना जरूरी है। चुन्नट एक समान व समान दूरी पर सावधानीपूर्वक लगाये गये हो। चुन्नट डालते वक्त सीवन की तरफ पर्याप्त कपड़ा हो। ऐसा न हो कि पोशाक के घेरे में कहीं चुन्नट ज्यादा और कहीं कम डले हो। समान दूरी व सफाई के साथ सावधानीपूर्वक डाली गई चुन्नटें पोशाक को प्रभावी बनाती है।

(vii) बंधक : पोशाक पर लगी बटन पट्टियों की जांच के साथ-साथ इस बात की भी जांच कर लेनी चाहिये कि उपयुक्त व उचित बंधकों का उपयोग किया गया है। क्योंकि ये बंधक पोशाक के दो हिस्सों को जोड़ने का कार्य करते हैं।

* पोशाक पर लगे बटन और काज की अच्छे से जांच कर लेनी चाहिये, जैसे-बटन का रंग पोशाक के अनुरूप है, काज का नाप ज्यादा छोटा या बड़ा न हो, बटन व काज सफाई और मजबूती से लगाये व बनाये गये हों। पोशाक पर कुछ अतिरिक्त बटन लगे हैं कि नहीं। जिससे आवश्यकता पड़ने पर वैसे ही बटन लगाये जा सके।

* हुक व आई बनाने वाले धागे का रंग पोशाक के रंग से मेल खाता हो, हुक व आई सफाई के साथ मजबूत टांकों से समान दूरी पर लगे हों तथा ऊपर-नीचे न हों।

* जींस, पैंट, जैकेट, विशेष कुरते आदि पोशाकों में चेन लगी होती है। चेन को एक-दो बार खोल व बन्द करके देखना चाहिये। चेन की चौड़ाई, पोशाक के रंग से मेल खाती व मजबूती के साथ सफाई से लगी होनी चाहिये।

(viii) परिसज्जाएँ : पोशाक को आकर्षक और सुन्दर बनाने के लिये कुछ परिसज्जाएँ की जाती है, जैसे-लेस लगाना, कशीदा, डोरियाँ व झल्लर आदि। इनकी भी जांच आवश्यक है :-

पाइपिंग, लेस व डोरियों के रंग पक्के हो।

यह पोशाक पर सफाई और अनुपात में लगी हो।

जिस किस्म की पोशाक है उस पर उसी किस्म की परिसज्जा हो अर्थात् सूती वस्त्र पर सूती लेस, नायलोन के वस्त्र पर नायलोन की लेस लगी हो।

पोशाक पर पाइपिंग सफाई से उरेब कपड़े पर कटी हुई हो और सीवन मजबूत हो।

पोशाक पर कशीदा आकर्षक व सफाई के साथ किया हुआ परन्तु कशीदा के धागों का रंग पक्का हो।

(ix) लेबल : तैयार पोशाक पर लेबल लगा होता है। जिस पर पोशाक से सम्बन्धित कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारियां दी होती है जिनके आधार पर हम पोशाक की देख-भाल कर सकते हैं जैसे-नाप, नम्बर, कीमत व देख-भाल हेतु निर्देश दिए होते हैं जिन्हें पोशाक खरीदने से पहले सावधानीपूर्वक पढ़ लेना चाहिये।

इस प्रकार उपरोक्त महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं के आधार पर तैयार पोशाक का चुनाव व उत्तम गुणवत्ता की पोशाक खरीदी जा सकती है।

अभी तक आपने वस्त्र का व्यक्तित्व से सम्बन्ध, वस्त्रों का चुनाव, सिलाई एवं तैयार पोशाक की खरीददारी से सम्बन्धित जानकारियां प्राप्त की है।

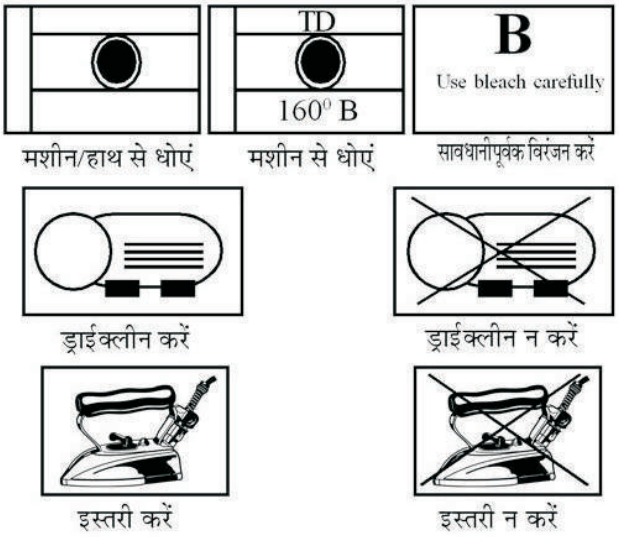

चित्र 24.1 वस्त्रों पर इंगित निर्देश

महत्त्वपूर्ण बिन्दु :

1. तैयार पोशाक खरीदने से समय व श्रम की बचत होती है।
2. तैयार पोशाक उचित नाप, आसान देख-भाल, आवश्यकता की पूर्ति, व्यक्तित्व के अनुकूल व साथ-साथ आरामदायक होनी चाहिये।
3. व्यक्ति की उम्र व शरीर के नाप को आधार मानकर पोशाक का चयन करें।
4. तैयार पोशाक खरीदते समय इन गुणों की जांच आवश्यक है, जैसे-कपड़ा, डिजाइन/स्टाइल, सीवन, तुरपाई, बटन पट्टियां, बंधक, परिसज्जाएँ व लेबल।
5. पोशाक पर लगे लेबल पर नाप/नम्बर, रेशे का प्रकार, कीमत एवं देख-भाल करने हेतु निर्देश लिखे होते हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न :

1. निम्न प्रश्नों के सही उत्तर चुनें :

(i) तैयार पोशाक के कपड़े में निम्न गुणों की जांच करें :

(अ) रेशा (ब) डिजाइन
(स) पक्का रंग (द) उपरोक्त सभी

(ii) एक ही उम्र के दो बच्चों के नाप हो सकते हैं :

(अ) समान (ब) अलग-अलग
(स) मिलते-जुलते (द) उपरोक्त में से कोई नहीं

(iii) सीवन जांचने हेतु पोशाक को करें :

(अ) उलटा (ब) तिरछा
(स) सीधा (द) उपरोक्त सभी

(iv) तैयार पोशाक होनी चाहिये :

(अ) आरामदायक (ब) आकर्षक
(स) कठिन देख-भाल (द) व्यक्तित्व के प्रतिकूल

(v) तैयार पोशाक खरीदने से बचत होती है :

(अ) आय (ब) समय
(स) श्रम (द) समय एवं श्रम दोनों की

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

(i) पोशाक खरीदने से पूर्व व्यक्ति की ..... एवं .....जान लेना आवश्यक है।

(ii) तैयार पोशाक पर सामान्य जानकारी हेतु ..... लगा होता है।

(iii) ..... को ध्यान में रखकर पोशाक की डिजाइन का चयन करें।

(iv) तैयार पोशाक उद्योग को एक ..... का रूप दे दिया।

3. 'तैयार पोशाक' का क्या अभिप्राय है?

4. कारण सहित स्पष्ट करें कि तैयार पोशाक का प्रचलन क्यों बढ़ता जा रहा है?

5. पोशाक की फिटिंग की जांच किस प्रकार करेंगे?

6. पोशाक का चुनाव किन बिन्दुओं के आधार पर करना चाहिये।

7. पिता/भाई के लिये शर्ट खरीदते समय किन-किन गुणों की जांच करेंगी और कैसे?

8. एक उपयुक्त व उत्तम पोशाक के गुणों की व्याख्या कीजिये।

9. बच्चों की पोशाक खरीदते समय किन-किन बातों का ध्यान रखेंगी।

उत्तरमाला :

1. (i) द, (ii) ब, (iii) अ, (iv) अ, (v) द

2. (i) उम्र एवं शरीर नाप, (ii) लेबल, (iii) प्रचलित फैशन, (iv) व्यवसाय

प्रायोगिक

तैयार पोशाक का मूल्यांकन

हम सभी कभी-न-कभी अपने स्वयं या परिवार के किसी सदस्य के लिये बाजार से तैयार पोशाक का चयन अवश्य करते हैं। अत: आप किसी भी एक पोशाक (फ्रॉक/सलवार कमीज) का निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर मूल्यांकन कर परिणाम प्रायोगिक पुस्तिका में लिखें।

पोशाक का नाम .....

उम्र ..... लिंग .....

क्र.सं.	जांच के बिन्दु	परिणाम
1.	पोशाक का नाप	
2.	कपड़ा	
3.	सीवन	
4.	तुरपाई	
5.	बटन पट्टी/चुन्नट	
6.	बंधक	
7.	लेस/पाइपिन/ डोरियां/कशीदा	
8.	लेबल	

निष्कर्ष :